श्री राम चंद्र मिशन
केवल निजी वितरण के लिए
मई २०१३ खंड ६, अंक ३
ECHOES INDIA

पूज्य बाबूजी महाराज का ११४वां जन्मोत्सव

हमारे प्रिय गुरुदेव ने एक बार फिर से हम पर शाश्वत प्रेम की बौछार की और तिरुप्पुर के डायमन्ड जुबली पार्क में आयोजित, पूज्य बाबूजी महाराज के हाल ही में संपन्न ११४ वे जन्मोत्सव के अवसर पर मिशन को एक और नये लक्ष्य तक पहुंचाया।

भाई कमलेश दिनांक २६ अप्रैल को तिरुप्पुर पहुंचे। उन्होंने कुछ तैयार सुविधाओं का उद्घाटन किया। वहाँ २९ तारीख तक प्रतिदिन दिन में तीन सत्संग – सुबह ६.३० बजे, दोपहर ११ बजे एवं शाम ५.३० बजे आयोजित होते थे। दिनांक २७ एवं २८ को सभी स्वयंसेवकों के लिये रात ९ बजे विशिष्ठ सत्संग आयोजित किए गए। २८ अप्रैल, रविवार को सुबह के सत्संग के बाद भाई कमलेश ने ५ विवाह संपन्न करवाये।

दिनांक २६ से अभ्यासियों का आना प्रारम्भ हुआ और वे स्वयंसेवकों में शामिल होते गए ताकि उत्सव की सभी तैयारियां पूर्ण हो सके। टैंट, भोजनालय, रसोई, सुरक्षा, जल प्रदाय, सफाई, कैन्टीन, चिल्ड्रन सेन्टर, पुस्तकों के स्टाल इत्यादि, अभ्यासियों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये तैयार थे। जहाँ आवश्यकता देखी वहाँ अभ्यासी अपना योगदान देते हुए देखाई दिए। एक बच्चे ने भी कहा, "मैने स्वयंसेवकों को दिल से कार्य करते हुए देखा"।

भंडारे के पहले दिन, २९ अप्रैल के संभाषण में भाई कमलेश पटेल ने इस पहलू पर ज़ोर दिया कि हमारे भन्डारे आध्यात्मिकता की विशालता के प्रतीक हैं। वो हमें आध्यात्मिक वैभव और भौतिक सरलता का जीवन जीना सिखाते हैं। उन्होंने व्हिस्पर्स से बाबूजी महाराज के दो सन्देश पढ़े और मानवता के पुनरुत्थान की भव्य योजना में अभ्यासी की भूमिका को समझाया।

२९ तारीख को जब मालिक के अगले दिन वीडियो प्रसारण द्वारा सम्भावित सम्बोधन के बारे में घोषणा हुई तो अभ्यासियों में हर्ष देखा गया। तभी से उस समय की प्रतीक्षा प्रारम्भ हो गई जिस क्षण मालिक ध्यान कक्ष में विशाल पर्दे पर दिखाई देंगे। अंततः ३० अप्रैल की सुबह को जब उन्होंने बाबूजी मैमोरियल आश्रम, मणपाक्कम के ध्यान–कक्ष में मालिक ने प्रवेश किया तो हृदय प्रेमपूरित हो गए एवं आँखें भर आईं। यह क्षण प्रेम और कृतज्ञता का था। उस दिन आगामी सत्संग तथा बाबूजी महाराज के विशेष सन्देश ने हम सभी को ईश्वरीय देखभाल का स्मरण दिलाया, जिसका मिशन तथा सभी अभ्यासियों को उत्तरदायित्व सौंपा गया है। बाबूजी ने उनके सन्देश में कहा, "हृदय का पूर्ण संकल्प ही, ना थकाने वाले किन्तु नियमित अभ्यास द्वारा, आध्यात्मिक हृदय को उसकी उच्चतम अवस्था पर प्रतिष्ठित करता है।"

भाई कमलेश ने दिनांक २८ के विवाह समारोह के अतिरिक्त ४ विवाह २९ को, तीन विवाह ३० अप्रैल को तथा चार विवाह १ मई को संपन्न कराए। सहज मार्ग में ये विवाह सादगी का प्रतीक एवं सीमापार की संस्कृतियों तथा भाषाओं में एकता का द्योतक है।

३३,००० अभ्यासियों एवं बच्चों ने इस वर्ष के समारोह में भाग लिया। एक विशाल परिवार तीन दिन तक यहाँ आनन्दमय रहा। परिसर में समर्पित दल धन्य है जिसे मालिक सैंकड़ों मील दूर से – हृदय से हृदय को – निर्देशित करते रहे। कोई कैसे उस रसोईघर के बारे में वर्णन करे जिसमें औसतन २५,००० लोगों का खाना पकाया गया हो,

वह भी दिन में तीन बार और खाने को बिना व्यर्थ किए? परिसर में तेईस सुरक्षा चौकियाँ स्थापित की गई थीं जिसमें हमारे अभ्यासी भाई एक दिन में तीन पारी में कार्य कर रहे थे। आवासीय दल के भाइयों एवं बहनों ने, जिन्होंने सर्वप्रथम दो माह पूर्व कार्यारम्भ किया था, सीमित साधनों के बावजूद हमारे ठहरने की सुविधाजनक व्यवस्था की। परिसर, विशेषतः रसोईघर और कैंटीन में मक्खियों की अनुपस्थिति देखी गई। स्वच्छता–घर, सफ़ाई–व्यवस्था तथा गृह–व्यवस्था दलों ने हमें स्वस्थ एवं सुविधाजनक आवास उपलब्ध कराने हेतु एकजुट होकर कार्य किया। हमारी सुविधा सुनिश्चित कराने हेतु उन्होंने अनिद्रा में कई रातें बिताई तथा अपना विश्राम–काल जैविक गन्दगी से भरे पीपों, बहते तरल, अप्रिय पदार्थों एवं पृथक्कृत गन्दगी से भरे हौज़ के बीच व्यतीत किया। उनके कठिन परिश्रम का साक्ष्य इस तथ्य से है कि २०१२ के भण्डारे में जठरांत्रकोप के २०२ प्रकरण दर्ज किए गए थे।

इस वर्ष केवल १०२ मामले सफर में दस्त के (ट्रैवल डायरीया) थे

और इस तरह का मामला परिसर में नहीं घटा। इसका दूसरा कारण आर.ओ. सयंत्र के द्वारा पेयजल का शुद्धिकरण था। तिरुप्पुर के गरम मौसम में ६ लाख लीटर पानी आर.ओ. शोधित पेयजल तथा २४ लाख लीटर पानी इन तीन दिनों में दूसरे उपयोग में खपत किया गया। कोई भी वाई.फाई. से लैस ट्रैवल डेस्क को, जो १२ काउंटर से युक्त था तथा अभ्यासियों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा था, को भुला नहीं सकता।

इस उत्सव के दौरान कई नए प्रकाशनों का विमोचन किया गया। कुछ विशेष विज्ञपतियां, कुछ नई किताबें और वीडियो के साथ–साथ कई भाषाओं में इन विज्ञपतियों को पुनः प्रकाशित किया गया। चुनने के लिए मिशन के प्रकाशनों की प्रभावशाली श्रृंखला थी। इसका विस्तार हमारे मालिक के सुंदर जड़े हुए चित्रों की चित्र प्रदर्शनी ने किया।

जब वयस्क सत्संग एवं अन्य कार्यक्रमों में उपस्थित थे, तब बच्चे अपनी आयु वर्ग पर आधारित गतिविधियों में व्यस्त थे। यह भी पहली बार था कि १२ से १७ साल के बच्चों के लिए गतिविधियों की य–ोजना बनाई गई थी। उन्होंने परिसर के आस पास के विभागों का भ्रमण भी किया और परिदृश्य के पीछे से देखा कि भंडारा किस प्रकार होता है।

भाई कमलेश ने क्षेत्र प्रभारी और कुछ केंद्र प्रभारी तथा पुरालेखन टीम की सभा को संबोधित किया। कई स्वयंसेवकों की टीमें भी इन आदर्श अवसरों को प्राप्त करना चाहती थी और उन्होंने अगले कुछ महीनों की योजनाओं के विषय में विचार विमर्श किया।

बहुत सारे स्वयंसेवक और भी थे जिन्होंने दिन रात काम करके सभी के आवास को सुविधाजनक बनाया। तथ्य यह है कि उत्सव में जो भी हुआ उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। भाई कमलेश ने अपने अंतिम संबोधन में कहा कि सभी दिव्य माध्यमों का धन्यवाद किया जिन्होंने बिना अपनी ओर ध्यान आकर्शित किए शांतिपूर्वक कार्य किया और मालिक की इच्छा को पूरा किया। अंतिम दिन और अधिक आनंद का था जब यह घोषणा की गई कि मालिक का जन्मोत्सव इस वर्ष तिरुप्पुर में मनाया जाएगा। समय एक बार फिर उस अवसर की ओर खटखटाने लगा जब प्रियवर हमारे हृदयों को प्यार से भर देंगें।

गुरुदेव काफी व्यस्त थे और इसके कारण काफी थके हुए थे। वे प्रतिदिन तीन प्रशिक्षिकों को सिटिंग दे रहे थे और अधिकतर दिनों में अपने आस-पास एकत्रित अभ्यासियों को सत्संग भी करा रहे थे। इसके अतिरिक्त वे फ्रांस से आए भाई पियेरे से अपने शारीरिक दर्द के लिए कुछ उपचार भी करा रहे थे जिससे उन्हें काफी आराम मिला। कार्य और स्वास्थ्य के दबाव के बीच गुरुदेव ने समय निकाल कर आई.एस.टी.पी. के लगभग ५० सहभागियों को गायत्री में आमन्त्रित किया।

गुरुदेव ने लालाजी मेमोरियल ओमेगा स्कूल के बारहवीं कक्षा के छात्रों को भी आमन्त्रित किया और उन्होंने छात्रों से कहा कि तथ्यों को याद करने के बजाय अपना लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि छात्रों को चीजों का मूल्यांकन करने के लिए हृदय का उपयोग करना चाहिए। जो कुछ भी आवश्यक है उसे अपनाना चाहिए और जो कुछ भी अनावश्यक है उसे छोड़ देना चाहिए और इस सम्बन्ध में शिक्षकों को छात्रों का मार्गदर्शन करना चाहिए।

एक अभ्यासी ने अपना अनुभव बताया कि जब वे सफाई कर रहे थे तो उन्हें अपने शरीर में एक आघात अनुभव हुआ और इस अनुभव से वे काफी डर गए। गुरुदेव ने उत्तर दिया,"इसमें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। देखिये, प्रत्येक व्यक्ति को एक दिन मरना ही है और यह निश्चित है। यह बात जानने के बाद हमें किसी भी चीज से डरने की क्या आवश्यकता है?"

मार्च २०१३

मार्च के आरम्भ से ही गुरुदेव गायत्री में रह रहे थे जबकि कॉटेज का कार्य अन्तिम चरण में था। भाई कृष्णा कॉटेज के कार्य की निगरानी करने लिए लगातार आ रहे थे। स्वयंसेवकों का एक बड़ा दल कॉटेज के चारों ओर बगीचे में भी कार्य कर रहा था।

अधिकांशतय: दोपहर को गुरुदेव 'उपनिषद गंगा' नामक टेलिविजन सीरियल देखते थे जिसमें उन्होंने न केवल विषय वस्तु को सराहा बल्कि उसके निर्देशन की भी तारीफ की। बृहस्पतिवार, १४ मार्च को गुरुदेव के पैर मे काफी तेज दर्द हुआ और उन्हें परीक्षण के लिए अस्पताल ले जाया गया उन्हें २-३ दिन न चलने की सलाह दी गयी और दर्द निवारक दवाईयां दी गईं।

पुनरुद्धारित कॉटेज का उद्घाटन

शुक्रवार २२ मार्च को गुरुदेव सुबह ८ बजकर २० मिनट पर ध्यानकक्ष में आए। उस समय कई अभ्यासी आ रहे थे। गुरुदेव ने लगभग १५ मिनट तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की और उसके बाद लगभग ५० मिनट तक सत्संग कराया। एक सगाई की रस्म सम्पन्न कराने के पश्चात गुरुदेव ने तीन नई किताबों का विमोचन किया। फिर वे कॉटेज की ओर गए और जैसे ही कॉटेज मे प्रवेश किया उन्होंने कहा कि "मुझे कॉटेज से निकले हुए छह महीने हो गए हैं।" उन्होंने रिबन काटा और कक्ष के मध्य में एक दिया जलाया। उन्होंने अपने शयनकक्ष में प्रसाद तैयार किया और वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों को वितरित किया। एक बहन के कहा कि उन्होंने अपने तीसवें जन्म दिवस पर स्वयं को बूढ़ा महसूस किया इस पर गुरुदेव ने कहा "मैं तुमसे तीन गुना उम्र का हूँ और अभी भी जवान महसूस करता हूँ। उम्र के साथ बुद्धि आती है। मैं बूढ़ा महसूस नहीं करता हूँ, केवल मेरा शरीर बूढ़ा है।" अमरीका से आए एक और अभ्यासी ने पूछा, "गुरुदेव, मैं भौतिक बिछड़ाव से कैसे निपट सकता हूँ" गुरुदेव ने कहा " जब भी तुम अकेले होते हो तो ऐसा सोचो कि गुरुदेव ठीक तुम्हारे सामने बैठे हैं।" अभ्यासी ने कहा " मैं ऐसा सोच तो सकता हूँ किन्तु मुझे सन्देह होने लगता है कि जो मैं सोच रहा हूँ क्या वह वास्तविक है।" गुरुदेव ने कहा "पश्चिम के साथ यह एक समस्या है। सन्देह बुद्धि से उत्पन्न होता है। जब एक वैज्ञानिक कहता है कि अणु है तो आप विश्वास कर लेते हैं, आप उस पर सन्देह क्यों नहीं करते? क्या आप ने अणु को कभी देखा है? विज्ञान और आध्यात्म के बीच यह एक असंबद्धता है कि विज्ञान जो कुछ कहता है हम उस पर विश्वास कर लेते हैं किन्तु आध्यात्मिकता पर हम सन्देह करते हैं।

अष्टांग योग और सहज मार्ग

बुधवार, २७ मार्च को होली थी और यद्धपि गुरुदेव काफी थके हुए थे फिर भी वे काफी अभ्यासियों से पूरे उत्साह और प्रसन्नता से मिले। गुरुदेव के परिवार के सदस्य सुबह ८ बजे आ गए थे क्योंकि उस दिन भार्गव का जन्मदिन था। गुरुदेव ने प्रसाद बांटा और अपने कार्यालय मे सत्संग कराया। दोपहर को गुरुदेव ने

'उपनिषद गंगा' नामक टेलीविजन सीरियल के २ भाग देखे और उसके बाद एक वार्तालाप हुआ कि किस तरह योग के ८ पारम्परिक चरणों से सहज मार्ग की उत्पत्ति हुई।

गुरुदेव ने बताया: यम और नियम घर में माता–पिता से और विद्यालय में शिक्षकों से सीखे जाते हैं। आसन और प्राणायाम– जब हम ध्यान करते हैं तो श्वास प्राकृतिक रुप से अपने आप नियन्त्रित होता है। जब कभी आप गहरे ध्यान में होते हैं तो दो–तीन मिनट तक आप साँस नहीं लेते। अत: यह स्वचालित है। तब त्यागना, प्राप्त करना आदि सब खत्म हो जाता है। ध्यान, हम कर रहे हैं। समाधि, योग की समाधि नही है जोकि पाषाण जैसी स्थिति के तुल्य है, आप समझे, बल्कि यह एक आन्तरिक स्थिति है जोकि शुरुआत में थी। शुरुआत का अर्थ है 'प्रकृति में जीवन की शुरुआत'। अत: यह सब कुछ सहज मार्ग हमें सिखाता है। जब आप ध्यान में गहराई में जाते हैं तब इसे महसूस करते हैं। उदाहरण के लिये, आज सुबह के ध्यान में मैं अचानक चेतना से बाहर आ गया। जब मैंने कहा 'कृपया शुरु कीजिये' मैं चेतना से बाहर था। जैसा कि मैं बता रहा था, अब मैं समझा कि महासमाधि का अर्थ क्या है क्योंकि ध्यान में आप अन्त तक जाते हैं कभी वापस ना आने के लिये। इससे बाहर आना कठिन से कठिनतर होता जाता है। कभी–कभी मैं जब सिटिंग शुरु करता हूँ एक घंटा बीत जाता है और मैं सोचता हूँ कि कुछ सेकेंड ही हुए हैं और दो या तीन अवसरों पर मैं उलझन में था कि क्या कहना है 'समाप्त कीजिये' अथवा 'कृपया शुरु कीजिये' फिर मैंने अपनी आँखें खोली और देखा कि सब ध्यान कर रहे है और मैंने कहा, "समाप्त कीजिये"।

नयी कॉटेज में पहले सप्ताह में गुरुदेव भोजन करने के लिये भोजन –कक्ष में जा रहे थे लेकिन बाद में वे अपने कक्ष में ही भोजन लेने लगे। उनके पैर में दर्द था, विशेषकर जब वे चलते हुये मुड़ते थे तब उनके घुटनों में बहुत ज्यादा दर्द था।

अभ्यासियों के साथ मिश्रित अनुभव

एक दिन पुणे से एक बहिन अपनी बेटी के साथ गुरुदेव से मिलने आयी, वह पशु शल्य–चिकित्सा की पढ़ाई कर रही थी और गुरुदेव उसकी पढ़ाई और विभिन्न शल्य–चिकित्सा जो वह कर चुकी थी, के बारे में पूछने के लिये बहुत उत्सुक थे।

गुरुदेव को बताया गया कि जबलपुर और गँज बसोड़ा से अभ्यासी आये हैं और उनसे मिलना चाहते हैं। वे बहुत खुश थे और उन्होंने कहा – जबलपुर मेरा केन्द्र है और उन्हें शाम ५ बजे आने के लिये कहा। अभ्यासियों के एकत्रित होने से पहले ही गुरुदेव तैयार थे और स्वंयसेवकों को उनकी कुर्सी रखने के लिये दौड़ना पड़ा। गुरुदेव ने सत्संग कराया और उसके बाद उनसे मिलने के लिये बड़ी संख्या में अभ्यासी उमड़ पड़े। अभ्यासियों की यह भीड़ बेकाबू थी और गुरुदेव की नाराज़गी देखी जा सकती थी। नाश्ता परोसा गया और बार–बार यह अनुरोध करने पर भी कि गुरुदेव के चरण न छुऐ सभी अभ्यासी चरण छूना चाहते थे। यह बहुत जरुरी है कि ऐसी घटनाओं से हम सीखें और अपने अन्दर एक परिवर्तन लाये कि गुरुदेव की उपस्थिति में हमें कैसा व्यवहार करना चाहिये।

रविवार ३१ मार्च, २०१३

वित्तीय वर्ष का अन्तिम दिन होने के कारण यह गुरुदेव के लिये बहुत व्यस्त दिन था। बंद दरवाजों के पीछे लेखा–जोखा दल के साथ उनकी मुलाकात लगभग ३ घंटों तक चली। गुरुदेव ने दोपहर का भोजन किया और गायत्री चले गये। वे कुछ दिन वहीं रहे क्योंकि कॉटेज में कुछ चीजों को लगाने की आवश्यकता थी। उनकी पोती माधुरी चेन्नई में थी इसलिये गुरुदेव ने उसके साथ भी कुछ समय बिताने का निर्णय लिया। चाहे कितना भी व्यस्त या कठिन उनका कार्यक्रम होता है, गुरुदेव हमको दिखाते हैं कि कैसे एक संतुलित जीवन जिया जाता है और उनके परिवार के लिये उनका ध्यान हम सब के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण है।

अप्रैल २०१३

गायत्री में चर्चा चल रही थी कि कैसे राजनीतिज्ञ अपनी शक्ति का उपयोग अपने स्वार्थ के लिये करते हैं और गुरुदेव ने जब हाल की ही कुछ घटनाओं के बारे में सुना तो वे बहुत दुखी हुए। वे उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के भ्रष्टाचार और शक्ति के दुरुपयोग से बहुत नाखुश थे और उन्होंने कहा कि यह बहुत तेजी से फैलता जा रहा है।

एक दिन एक बहिन (अमरीकी–भारतीय) चेरोकी से गायत्री में आयी। उसने तभी प्रारम्भिक सिटिंग ली थी और गुरुदेव से मिलने आयी थी। गुरुदेव ने कहा," तुम पहली अमरीकी भारतीय अभ्यासी हो। मेरे पास आओ, मैं तुम्हे देखना चाहूँगा।" गुरुदेव ने उसकी आँखों में गहराई से देखा। उसने बताया कि उसका नाम गायत्री है और गुरुदेव ने व्याख्या दी, "जब मेरा बेटा कृष्णा पाँच वर्ष का था तब हमने यह घर

बनवाया था और सहज मार्ग में आने से पहले उस समय हम गायत्री मन्त्र का अभ्यास करते थे, इसलिये हमने इस घर का नाम यह रखा।"

गुरुदेव ने उससे उसका वास्तविक भारतीय नाम पूछा और वह बोली, "जब मैं छोटी थी तब मुझे 'लिटल डियर' ('छोटी हिरनी') कहकर पुकारते थे।" गुरुदेव ने इर्द-गिर्द के सभी अभ्यासियों से उसका परिचय कराया और उसे अपनेपन का अहसास कराया।

गुरुदेव एक बुज़ुर्ग अभ्यासी दम्पत्ति से मिले उन्होंने गुरुदेव को बताया कि अमरीका में बसा हुआ उनका बेटा भारत नहीं आना चाहता और इसलिए वे उससे मिलने अमरीका जा रहे हैं। गुरुदेव काफ़ी व्यथित हुए और बोले कि इसके लिए उनकी स्वीकृति नहीं है। "यह मेरा आपको निर्देश है किन्तु आप तय करें कि आप क्या करना चाहते हैं।" ऐसा कभी-कभार ही होता है कि गुरुदेव ऐसे सीधे निर्देश देते हैं।

इस सप्ताह गुरुदेव ने अपनी पोती माधुरी के साथ काफ़ी समय बिताया। एक दिन वे उसे एक मॉल में ले गए और उसके लिए उपहार लिए। यह देखना रोचक था कि गुरुदेव किस प्रकार उपहारों का चयन करते हैं। उन्होंने परिवार के लिए भी उपहार ख़रीदे और बड़े ध्यानपूर्वक यह सुनिश्चित किया कि ख़रीदी हुई चीज़ों की सभी रसीदें सुरक्षित रखी जाएँ और बाद में प्रेम और आशीर्वाद सहित उपहार बाँटे गए। वे जो भी काम करते हैं, हरेक में सम्पूर्ण सतर्कता, सौम्यता और प्यार होता है।

शुक्रवार १२ अप्रैल को माधुरी के लन्दन जाने के बाद गुरुदेव मणपाक्कम में कॉटेज में आ गए। उनके दाएँ पैर और साथ ही दाएँ हाथ में लगातार दर्द हो रहा था। बुधवार १७ अप्रैल को गुरुदेव मणपाक्कम के एम.आई.ओ.टी.अस्पताल में एम आर आई स्कैन के लिए गए जिससे एक समयावधि तक रेडीऐशन चिकित्सा की आवश्यकता प्रतीत हुई। हर तरफ़ उदासी की भावना छा गई थी किन्तु रविवार २० अप्रैल को गुरुदेव ने सत्संग में आकर सबको चकित कर दिया उसके बाद वे भाई चक्रपाणि की तमिल वार्ता के दौरान भी बैठे रहे। उनकी बीमारी ने उन्हें अपना दैनिक काम करने से चाहे वह आध्यात्मिक हो या प्रशासनिक नहीं रोका। दर्द और असुविधा के बावजूद गुरुदेव हर बात का मुस्कुराहट के साथ सामना करते हैं और हमेशा की तरह दीप्तिमान नज़र आते हैं। सी.टी.स्कैन ने समस्या की पुष्टि की है। आइये हम सब मिलकर प्रार्थना करें कि यह बाधा शीघ्र दूर हो और हमारे प्रिय गुरुदेव अपनी शक्ति और सुस्वास्थ्य फ़िर से प्राप्त करें।

मुदनूर, उत्तर कर्नाटक में नया केन्द्र

मुदनूर में जो कि उत्तर कर्नाटक का एक जल-समृद्ध ऐतिहासिक स्थान है, एक नया केन्द्र शुरु हुआ। लगभग पन्द्रह अभ्यासी एक अभ्यासी के घर में रविवार के सत्संग के लिए नियमित रुप से उपस्थित होते हैं। निकटवर्ती स्थानों से प्रशिक्षक व्यक्तिगत सिटिंग देने केन्द्र में नियमित रुप से आते हैं।

३१ मार्च को मुदनूर गाँव में एक पाठशाला के परिसर में अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया गया। आसपास के स्थानों से लगभग साठ अभ्यासी कार्यक्रम में शामिल हुए। सुबह और सायंकाल के सत्संग के साथ-साथ साधना के मूलभूत पक्षों को विस्तार से समझाया गया। इसके बाद प्रश्नोत्तर का सत्र हुआ।

सायंकालीन सत्संग के बाद एक खुली सभा का आयोजन किया गया जिसमें लगभग पन्द्रह अभिलाषी उपस्थित थे। डॉ. गजेन्द्र सिंह, बहन मीरा कुलकर्णी और भाई राजू काशमपुरकर इस अवसर पर बोले। कुल मिलाकर परिणाम बहुत अच्छा रहा और कुछ अभिलाषियों ने प्रारंभिक सिटिंग लेने की इच्छा भी व्यक्त की।

अहमदनगर में ध्यान कक्ष का उद्घाटन

ज़ोनल प्रभारी, भाई अरुणकुमार चौहान, ने ३१ मार्च २०१३ को ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। निकटवर्ती जिलों से अभ्यासी उद्घाटन में भाग लेने पहुँचे और वातावरण को उल्लासमय बना दिया। ध्यान कक्ष भाई खानदेशी द्वारा दान रुप में दिया गया है और यह लगभग १०० अभ्यासियों के लिए काफ़ी है। आशा है कि यह ध्यान कक्ष केन्द्र की नियमित गतिविधियों का बेहतर रुप से आयोजन तथा संचालन करने में सहायता करेगा।

समारोह सुबह के सत्संग के बाद भजन के साथ आरम्भ हुआ, बाद में 'भक्ति' पर एक लघु नाटिका हुई जिसमें शीघ्र प्रगति के लिए हमारी साधना में भक्ति की भूमिका को समझाया गया। तत्पश्चात् एक खुली सभा हुई जिसमें हमारे जीवन और सहज मार्ग में सन्तुलन की आवश्यकता को दोहराया गया। बहन गीतांजलि काले द्वारा नए पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया। भोजन के उपरान्त 'देने' के महत्त्व पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का समापन सायंकालीन सत्संग के साथ हुआ।

अखिल भारतीय निबंध लेखन समारोह

यह एक अविरत समारोह है, यू.एन.आई.सी और एस.आर.सी.एम द्वारा सहयोगपूर्ण कार्यक्रम है जो हर साल देश भर में आयोजित किया जाता है। इस साल ९,७९८ शैक्षणिक संस्थाओं से १,७०,१४८ विध्यार्थियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय तर पर इनाम वितरण समारोह २४ फरवरी को, गुड़गाँव के ज़ोनल आश्रम में हुआ। श्रीमती किरन मेहरा –केर्पेल्मन, डायरेक्टर यू.एन.आई.सी, भारत और भूटान, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। राष्ट्रीय विजेता – विवियन ऍनड्युज़ और सत्यार्थ शर्मा ने श्रोताओं के सामने अपने दृष्टिकोण व्यक्त किये जो इस निबंध लेखन के द्वारा उनमें जागृत हुए थे और सबको प्रभावित किया।

जोनल और संस्थान स्तर के इनाम वितरण देश भर में बड़े ही उत्साह से रचाए गये। यह सहज मार्ग को समाज में पेश करने का एक प्रकार का ओपन हाउस/ खुला सत्र साबित हुआ।

भुवनेशवर, उड़ीसा में, विजेताओं के माता–पिताओं ने समारोह के अनोखेपन को सराहा और केंद्र द्वारा प्रसारित उत्साह को नमन किया। चन्द्रपुर, महारष्ट्र में, श्री शान्तारामजी पोट्दुखे, भुतपूर्व राज्य आर्थिक मंत्री, मुख्य अतिथि थे और ज़ोन प्रभारी भाई राजेंद्रन ने जीवन में आध्यात्मिक साधना की भूमिका के बारे में बात की। रांचि, झारखंड़ में, डॉ अनिल कुमार पांडे, विख्यात शल्य चिकित्सक, मुख्य अतिथि थे और केंद्र प्रभारी ने सहज मार्ग का श्रोताओं से परिचय करवाया। ज़ोनल आश्रम, तुमकुंठा, हैदराबाद में श्रीमती सुमन कपूर – अध्यक्ष अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम– बी.आई.टी.एस पिलानी ने राष्ट्रीय और ज़ोनल स्तर के विजेताओं को मैडल और प्रमाण–पत्र बाँटे। खम्मम आश्रम ए.पी में, श्री सी.एच. वेंकट रेड्डी डी.ई.ओ, मुख्य अतिथि थे और मुल्याधारित शिक्षा कि ज़रूरता पर बात चीत हुई। विजयवाडा आश्रम, ए.पी में केंद्र प्रभारी ने व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिकता कि ज़रूरत पर जोर दिया। देवकोट्टई, तमिलनाडू में ज़ोनल स्तर की विजेता कुमारी पवित्रा को सम्मानित करने के लिए स्कूल में एक समारोह का आयोजन किया गया। मेहसाना, गुजरात में स्कूल और कॉलेज के विजेताओं के लिए अलग अलग समारोह रचाया गया और सहज मार्ग का श्रोताओं से परिचय करवाया गया।

राजस्थान में जोनल स्तर पर कार्यक्रम अल्वर आश्रम और राजगढ़ में रचाया गया। अल्वर आश्रम में श्रीमती अंजना सहाय – सेंट्रल अकादमी उच्च माध्यमिक स्कूल की मुख्य अध्यापिका मुख्य अतिथि थीं और श्री विष्णु स्वामी – डी.आई.ई.टी (शिक्षा और प्रशिक्षण – ज़िला संस्था) के प्राध्यापक विशेष अतिथि थे। पय्यनूर, केरला में, डॉ ए.के. सुधर्मा – श्री शंकराचार्या विश्वविद्यालय में संस्कृत के सहयोगी प्रोफेसर ने कार्यक्रम का संचालन किया और विजेताओं को पुरस्कार भी बाँटे।

'ग्राउन्डिंग इन द प्रैक्टिस' ट्रेनिंग प्रोग्राम

भारत के कुछ केन्द्रों में 'ग्राउन्डिंग इन द प्रैक्टिस' (जी आई टी पी) ट्रेनिंग प्रोग्राम, इस उद्देश्य के लिये प्रशिक्षित समन्वयकों द्वारा अति उत्साह से किये गये। जी आई टी पी चार भागों में बना हुआ है– डायरी लेखन, ध्यान, सफ़ाई और प्रार्थना जो प्रत्येक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के रूप में संचालित होता है। यह कार्यक्रम साधना की गुणवत्ता सुधारने के लिये छोटे समूहों में क्रियात्मक सत्रों द्वारा, आत्मनिरीक्षण, मालिक के कथनों और व्हिस्पर्स के सन्देशों पर केन्द्रित है।

उत्तर प्रदेश में, ये सत्र बी एम ए, लखनऊ, कानपुर और मैनपुरी में संचालित हुए। इलाहबाद की समन्वयक टीम ने फ़तेहपुर और प्रतापगड़ केन्द्रों में तीन दिवसीय कार्यक्रम संचालित किए। उड़ीशा के भुवनेश्वर में, बडौदा केन्द्र के विज़िटिंग समन्वयक द्वारा संचालित तीन दिवसीय सत्र में बीस अभ्यासियों ने भाग लिया।

हैदराबाद के ज़ोनल आश्रम में, यह प्रत्येकी तीन दिनों के दो सत्रों में गोदावरी खनी, श्रीरामपुर, वारंगल, भोनगिर, बेलमपल्लि, घनपुर, अश्वपुर और हैदराबाद के अभ्यासियों के लिये तेलुगू में संचालित हुआ। डोमलगुडा आश्रम, हैदराबाद में, यह प्रत्येक रविवार को तेलुगू में एक दिवसीय कार्यक्रम था। विजयवाड़ा (ए.पी.) में इस चार दिवसीय कार्यक्रम के चार सत्र, निकटवर्ती केन्द्रों के १०० अभ्यासियों को शामिल करते हुए किए गए।

कोलकाता के समन्वयक दल ने दो दिवसीय कार्यक्रम एक सिलिगुड़ी और एक बंडेल में संचालित किया। इसी तरह के कार्यक्रम रानीगंज और गंगटोक में अप्रैल और जून के दौरान किये जायेंगे।

अहमदाबाद के अदालाज़ योगाश्रम गुजरात में, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के आठ क्षेत्रों के अभ्यासियों को शामिल करते हुए जी आई टी पी संचालित हुए। गुजरात के बड़ोदरा और बलसाड़ आश्रमों में दो दिवसीय कर्यक्रमों के कई सत्र हुए।

तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों के ग्यारह सहायकों (फ़ेसिलिटेटरों) ने मिलकर उड़ूमलाईपेट आश्रम में लगातार दो रविवार को करीब सत्तर अभ्यासियों के लिये डायरी लेखन पर ट्रेनिंग प्रोग्राम किये। एम. पी. में, उज्जैन, विदिशा और इन्दौर केन्द्रों को शामिल करते हुए जनवरी से मार्च के मध्य दस जी आई टी पी संचालित हुए। ये ट्रेनिंग प्रोग्राम आदेशों के अनुरूप संचालित हुए और अभ्यासियों द्वारा अच्छी प्रतिक्रिया के चलते इसी प्रकार के और प्रोग्राम भविष्य में भी होंगे।

पाली, राजस्थान में कार्यशाला

२३–२४ मार्च को पाली जिले में दो दिवसीय एक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें सात शहरों के लगभग ११५ अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यशाला साधना एवं उससे सम्बन्धित प्रश्नों पर आधारित थी। सुबह के सत्संग के बाद गुरुदेव का एक चलचित्र दिखाया गया। 'ध्येय' विषय पर केन्द्रित प्रस्तुतियां व खेल आयोजित किये गये। सामूहिक क्रियाकलापों में अभ्यासियों ने अपने अभ्यास में आने वाली समस्याओं के बारे में विचार विमर्श किया। साँयकालीन सत्संग के साथ सत्र की समाप्ति हुई।

दूसरे दिन कार्यशाला की शुरुआत गुरुदेव के चलचित्र व वार्ताओं एवं दस नियमों पर परिचर्चा के साथ हुई। भजन एवं बाँसुरी वादन भी कार्यशाला का हिस्सा थे। प्रशिक्षकों ने दैनिक जीवन में मालिक पर निर्भरता के सम्बन्ध में बहुत से प्रश्नों का समाधान किया। साँयकालीन सत्सगं के साथ सत्र की समाप्ति हुई।

पम्मारु, आंध्र प्रदेश में पूर्णदिवसीय कार्यक्रम

पम्मारु विजयवाड़ा से ३० कि०मी० दूर कृष्णा जिले के पूर्वी छोर पर स्थित ग्राम है। केन्द्र की शुरुआत २००९ में केवल दो अभ्यासियों से हुई और तब से केन्द्र तेजी से बढ़ रहा है और अब १२० अभ्यासी हैं।

इस केन्द्र के अभ्यासियों ने विजयवाड़ा केन्द्र के सहयोग से ३१ मार्च को एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। लगभग १८० अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। भाई के. वी. सुब्बाराव, केन्द्र प्रभारी, विजयवाड़ा ने प्रारम्भिक वार्ता दी जिसमें उन्होंने गुरुदेव द्वारा दी जाने वाली शुक्रवार की सिटिंग को समाहित करते हुए परिश्रमपूर्ण अभ्यास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होनें बताया कि किस प्रकार यह उन केन्द्रों के अभ्यासियों, जहाँ कोई प्रशिक्षक नहीं है, की सहायता करती है। अप्रैल में होने वाले भंडारे के सम्बन्ध में भी कई बिन्दुओं पर चर्चा की गयी।

बहनों का कार्यक्रम, रायपुर, छत्तीसगढ़

रायपुर आश्रम में प्रत्येक महीने के आखिरी रविवार को बहनों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। ३१ मार्च को उन्होने "मानव के विकास में सद्गुरु की भूमिका" पुस्तक पर आधारित विषय 'आज्ञाकारिता' पर एक सामूहिक चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम मालिक के लिये आज्ञाकारिता कैसे पैदा करें जैसे प्रश्न व अर्थ को अन्तर्निहित करने पर आधारित था । अभ्यासी उपरोक्त प्रश्नों पर चर्चा करने के लिये समूह में विभाजित किये गये। चर्चा का निष्कर्ष था कि आध्यात्मिकता में उन्नति के लिये आज्ञाकारिता आवश्यक है और आज्ञाकारी बनने के लिये प्रत्येक को दस नियमों का पालन करना चाहिये। इस कार्यक्रम ने अभ्यासियों में नया उत्साह भर दिया।

पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम, भीलवाड़ा, राजस्थान

३ मार्च को भीलवाड़ा में सत्संग के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसमें १३२ अभ्यासियों ने भाग लिया। एक बहन जिसने शाहजहाँपुर में हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया था अपना अनुभव बताया।

कार्यक्रम का विषय 'भंडारा' था एवं युवाओं ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की जिसमें दिखाया गया था कि जीवन चयनों की एक श्रंखला है एवं सही चयन का कितना महत्व है। एक संवादात्मक सत्र में अभ्यासियों ने भंडारे के बारे में अपनी समझ पर चर्चा की। यह महसूस किया गया कि भंडारे विशेष कृपा से आलोकित दिन हैं एवं जो उसमें उपस्थित रहते हैं उन्हें प्रेम एवं भाईचारा बढ़ाने का मौका मिलता है। भंडारे के सम्बन्ध में 'व्हिस्पर्स' से सन्देश पढ़ने के बाद एक चलचित्र चलाया गया। साँयकालीन सत्संग के साथ सत्र का समापन हुआ।

युवा कार्यक्रम, नासिक, महाराष्ट्र

२४ मार्च को लेफ़्टिनेन्ट कर्नल श्री सुधीर पराशर ने युवाओं के लिये "नेतृत्व" इस विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले २५ युवाओं में से प्रत्येक युवा ने "नेतृत्व" एवं एक आदर्श नेता के बारे में अपने–अपने विचार व्यक्त किये। ऐसा विचार व्यक्त किया गया कि एक आदर्श एवं प्रभावी नेता हमेशा एक उदाहरण स्थापित करता है। इसके बाद एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें ये बताया गया कि यह सेना से सीखा जा सकता है।

पूज्य मालिक की इस इच्छा के बारे में भी चर्चा की गई कि सहज मार्ग के युवा किस तरीके से सामंजस्य, शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिये नेतृत्व कर सकते हैं। प्रेरणादायक क्लिपिंग्स एवं वास्तविक जीवन पर आधारित उदाहरणों ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़ी। युवाओं ने पूज्य मालिक के उन शब्दों को याद किया जहाँ वे कहते हैं कि नेता न केवल रास्ता दिखाता है और उसपे चलता है बल्कि वो स्वयं में एक पथ का निर्माण करता है। युवाओं ने संकल्प लिया कि वे पूज्य मालिक की अपेक्षाओं के अनुसार बनेंगे।

युवा कार्यक्रम, पश्चिम बंगाल

१७ मार्च को कोलकत्ता केन्द्र के १५ अभ्यासियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के शुरु में कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बतलाया गया तथा भाग लेने वालों का परिचय कराया गया। उसके पश्चात भाग लेने वालों को पूज्य मालिक की वार्ता "जीवन की जरूरतें एवं इच्छाएं" के पर्चे बाँटे गए और इस पर व्याख्या के लिये प्रेरित किया गया।

इस परिचर्चा का मुख्य विषय था जीवन की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं में फर्क, विभिन्न प्रकार की आवश्यकताएं जैसे कि मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक। किस प्रकार ये आवश्यकताओं से हट कर इच्छओं का स्थान ले लेती हैं तथा सहज मार्ग किस प्रकार मनुष्य की ईश्वर से जुड़ने की आवश्यकता पूरी कर सकता है।

गुव्हाटी, असम

एक अभ्यासी के घर कार्यक्रम आयोजित किया गया जहाँ पर ३७ अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के बाद गोव्हाटी में स्वंयसेवक के कार्यों के बारे में चर्चा की गयी तथा २०१२ के निबंध कार्यक्रम की समीक्षा की गयी। उन चीज़ो पर चर्चा की गयी जिससे की अधिक से अधिक शिक्षण संस्थाओं को निबन्ध कार्यक्रम में भाग लेने के लिये तैयार किया जा सके। आश्रम के प्रभावी उपयोग के लिये हर महीने खुले सत्र (ओपन हाउस) और नये अभ्यासियों के लिये स्पष्टिकरण सत्र आयोजित करना निश्चित हुआ।

कार्यक्रम में ये भी चर्चा की गयी कि पूज्य मालिक के कामों में भाग लेकर अभ्यासी अपनी आध्यात्मिक प्रगती कर सकते हैं। भाईचारा, उदारता एवम अनुसरण सीख सकते हैं तथा ये सब करते समय

अनजाने में ही सतत स्मरण में रहते हैं जो कि आध्यात्मिक जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम से अभ्यासियों के बीच भाईचारे की भावना को प्रोत्साहन मिला।

युवा कार्यक्रम, भीलवारा, राजस्थान

२४ मार्च को, "लक्ष्य" इस विषय पर हुई चर्चा में, १६ अभ्यासियों ने भाग लिया। प्रश्नोत्तर सत्र में मनुष्य जीवन का उद्देश्य, तथा आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्व, ध्यान की आवश्यकता, सफ़ाई, सोने से पहले की प्रार्थना एवम सतत स्मरण के महत्व जैसे अनेक विषयों ने चर्चा को आगे बढाया। 'सहज मार्ग के मूल तत्व' नामक पुस्तक के अन्शों को पढा गया। इसका उद्देश्य अभ्यासियों की समझ और वास्तविकता के बीच अन्तर को कम करना था।

मार्च के अंतिम रविवार को युवाओं की बैठक आयोजित की गयी जिसमें १३ अभ्यासियों ने भाग लिया तथा युवाओं की मिशन के कामों में अधिक से अधिक भागीदारी हो – इस विषय पर चर्चा की गयी। अभ्यासियों ने प्रत्येक रविवार को सत्संग के बाद आश्रम में ही रुकने का निश्चय किया। यह भी निश्चय किया गया कि वह उन अभ्यासियों से मिलेंगे जो सत्संग में नियमित रूप से नहीं आते। उन अभ्यासियों की सहायता ली जाएगी जिन्होनें उनको मिशन से परिचित कराया था। ऐसी आशा की जाती है कि ये अभ्यासियों को उनके अभ्यास को नियमित करने में मदद करेगा।

नए प्रकाशन

हार्ट स्पीक (दिल की बात) २०१०
तेलगु
तमिल
मराठी
मलयालम
कन्नड़
हिन्दी
गुजराती

नई नियुक्तियां

बहन जननी सुब्रामनिअन
मिशन के मुख्यालय के लिए एच आर डी प्रबंधक

भाई इन्दुसेखरन वी पिल्लै
थिरुअनंतपुरम के केन्द्र प्रभारी

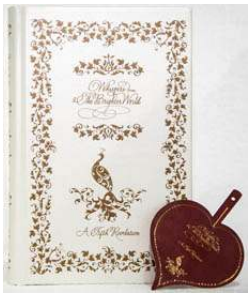

क्विसपर्स फ्रॉम दी ब्राईटर वर्ल्ड – पाँचवा प्रकटीकरण

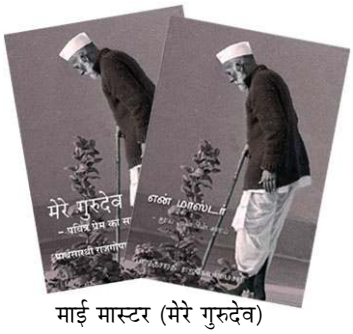

माई मास्टर (मेरे गुरुदेव) तमिल, हिन्दी

रोल ऑफ दी मास्टर इन ह्यूमन एवोल्यूशन (मानव विकास मे गुरु की भूमिका) – मराठी, कन्नड़, मलयालम

हार्ट स्पीक (दिल की बात) २०१२ – इंग्लिश

हार्ट स्पीक (दिल की बात)२००८ – कन्नड़

डाउन मैमोरी लेन (यादों की गलियों में) भाग१ तेलगु

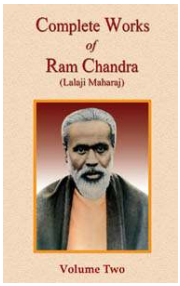

राम चन्द्र की सम्पूर्ण कृतियां (लालाजी महाराज)–भाग २ इंग्लिश

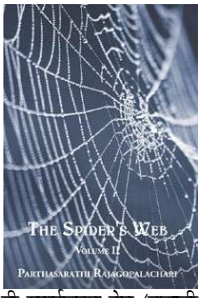

दी स्पाईडरस् वेब (मकड़ी का जाल) भाग २ इंग्लिश

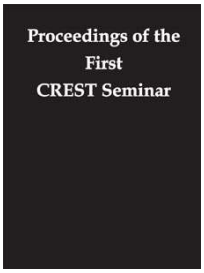

क्रेस्ट के प्रथम सेमीनार की कार्यवाही – इंग्लिश

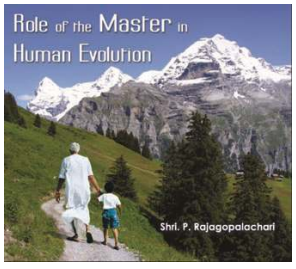

रोल ऑफ दी मास्टर इन ह्यूमन एवोल्यूशन (मानव विकास मे गुरु की भूमिका) एम पी ३ इंग्लिश

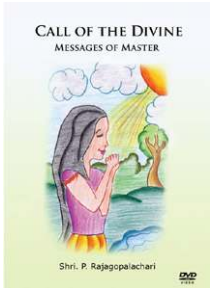

कॉल ऑफ दी डिवाईन (ईश्वर की पुकार) डी वी डी –इंग्लिश

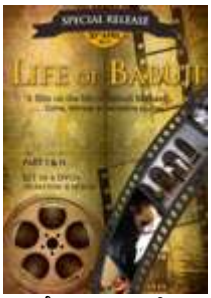

लाईफ ऑफ बाबूजी (बाबूजी का जीवन) डी वी डी –इंग्लिश

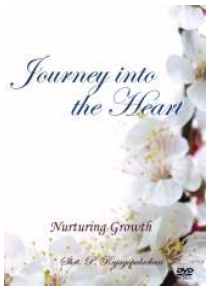

जर्नी इन टू दी हॉर्ट (हृदय की यात्रा) डी वी डी –इंग्लिश

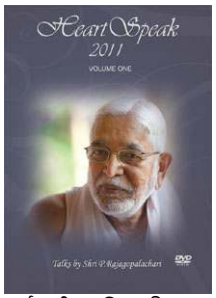

हार्ट स्पीक (दिल की बात) २०११ डी वी डी –इंग्लिश

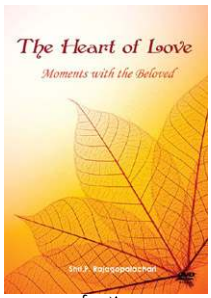

द हार्ट ऑफ लव डी वी डीग्लिश

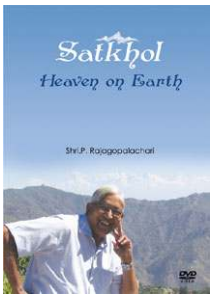

सतखोल – हैवन ऑन अर्थ (पृथ्वी पर स्वर्ग) डी वी डी –इंग्लिश

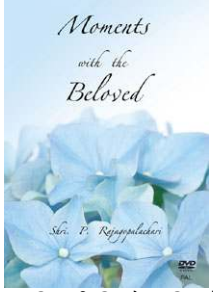

मोमेंट्स विथ दी बिलवेड (प्रिय के साथ पल) डी वी डी – इंग्लिश

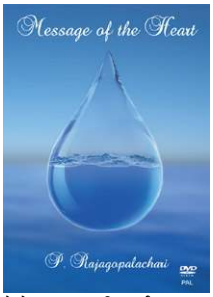

मैसेज ऑफ दी हार्ट (हृदय के संदेश) डी वी डी – इंग्लिश

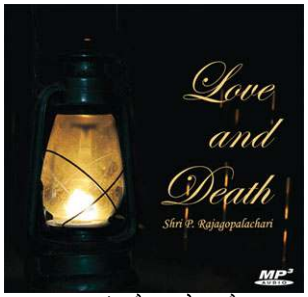

लव अंड दैथ (प्रेम और मृत्यु) एम पी ३ – इंग्लिश

माई मास्टर (मेरे गुरुदेव) एम पी ३ – इंग्लिश, हिन्दी, तमिल

हार्ट स्पीक (दिल की बात) २००७ एम पी ३ – इंग्लिश

अमलापुरम आश्रम, आन्ध्र–प्रदेश

प्रकाश का केन्द्र

अमलापुरम एक मध्यम आकार का कस्बा, आन्ध्र–प्रदेश के पूर्वी गोदावरी प्रान्त में राजामुन्द्री से साठ कि.मी. दूर बसा है। काकीनाड़ा व राजामुन्द्री ये दो शहर अमलापुरम से जुड़े हुए हैं। यह आश्रम भारत में स्थित सहज मार्ग के पुराने आश्रमों में से एक है एवं आन्ध्र–प्रदेश में स्थापित आश्रमों में तीसरा है। चार दशक से भी ज़्यादा समय से यह आश्रम आध्यात्मिकता का केन्द्र रहा है। यह केन्द्र एक अभ्यासी पी.बी. रामुडू, जो सन् १९६९ में आश्रम से जुड़े हैं, के माध्यम से सन् १९७१ में अस्तित्व में आया और इन्होंने ही अपने मित्र डा. अप्पारी रामाकृष्णा को मिशन से परिचित कराया। बाद में डा. अप्पारी रामकृष्णा इस केन्द्र के पहले प्रशिक्षक बने एवं इनके आवास में साप्ताहिक सत्संग होने लगा जिसमें करीब १५–२० अभ्यासी शामिल होते थे। इन्होंने अमलापुरम नगर–पालिका के अन्तर्गत ४८४ वर्ग यार्ड की एक ज़मीन आश्रम भवन बनाने के लिये प्रस्तावित की। बाबूजी महाराज की स्वीकृति के बाद इस ज़मीन को अभ्यासियों के उन्मुक्त दान के सहयोग से खरीदा गया। यह जगह सरकारी बस परिसर से १ कि.मी. की दूरी पर है।

बाद में श्री वी.पी.डी. नागेश्वर (केन्द्र–प्रभारी) ने १० मार्च १९८२ को यहाँ आश्रम भवन निर्माण शुरु करने की नींव रखी। निर्माण कार्य १८ महीनों में पूर्ण हुआ। बाबूजी महाराज से यह सन्देश पाकर कि इस जगह का उद्घाटन हो चुका है और यह उपयोग के लिये तैयार है, अभ्यासियों ने इस जगह का उपयोग ध्यान के लिये करना शुरु कर दिया। बाद में बहन कस्तूरी ने इस केन्द्र की यात्रा के दौरान इस आश्रम का विधिवत् उद्घाटन किया।

इस ध्यान–कक्ष का आकार २२*३२ फ़ुट है जिसमें एक ९ फ़ुट का गलियारा भी सम्मिलित है। इसके चारों कोनों में चार द्वार हैं और प्रथम तल पर दो कमरे हैं। वर्तमान में प्रथम तल के कक्षों का उपयोग बाल केन्द्र, पुस्तकालय व आश्रम कार्यालय के लिये होता है। सन् २०१०–११ में गुरुदेव की स्वीकृति और ज़ोनल–प्रभारी भाई मधु कोथापल्ली के सहयोग से इस आश्रम भवन में एक रसोई–घर और कुछ शौचालय बनाकर कर इसका पुनरुद्धार किया गया। लगभग ८० अभ्यासी रविवार को यहाँ सत्संग में शामिल होते हैं। महीने के हर दूसरे रविवार को आश्रम में पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम होता है। इस केन्द्र में दो प्रशिक्षक हैं।

यह आश्रम दूसरे उपकेन्द्रों जैसे राजौल, जगन्नापेटा, नरसापूर व यानम के समीप है। गुरुदेव अपनी पत्नी, बहन सुलोचना, के साथ इस आश्रम में १६ अप्रैल १९८६ में आये थे और दो दिन ठहरे थे।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. “Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.